‘‘सूर्यबाला व ममता कालिया के उपन्यासों में नारी’’

‘‘बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ’’

हिन्दी विषय में

पीएच.डी. उपाधि हेतु

शोध का प्रारूप

शोध निर्देशक

डॉ. चित्रा

शोधार्थी

प्रिया रोलानियाँ

Enrollment Number. JVR-I/19/1032

हिन्दी विभाग

ज्योति विद्यापीठ, महिला विश्वविद्यालय, जयपुर

प्रस्तावना

उपन्यास शब्द मूलतः उप+निःअस्+धञ् धातु के सम्यक नियोजन से हुआ है। जिसका अर्थ है। निकट रखना या पास में रखना होता है। उपन्यास साहित्य की अनेक विधाओं में से एक ही है। यह एक आधुनिक विधा है। जिसका प्रारंभ 19वीं शताब्दी से माना जाता है। उपन्यास का मूल आधार वास्तविक व काल्पनिक एवं मिश्रित कथा से होता है। इस विधा का प्रयोग कर अनेक रचनाकारों ने समाज की नयी दिशा एवं प्रगति दी है। इसमें विभिन्न तत्वों एवं विषय शैली पर गंभीरता से चिंतन मनन किया जाता है।

उपन्यास विधा में एक मूल कथा और अनेक उपकथाऐं साथ–साथ विचरण करती है जबकि साहित्य की अन्य विधाओं में ऐसा नहीं है। इसमें कौतूहल भी होता है और यथार्थ अंकन भी। इसका मूल उद्देश्य सामाजिक सांस्कृतिक, नैतिक, बौद्धिक, अन्य सभी समस्याओं को समाज के समक्ष प्रस्तुत करना रहा है। नियम व सिद्धान्तों को सहारा लेकर जीवन के हर छुए व अनछुऐ पहलुओं को उजागर कर मुख्य ध्येय है।

यह एक विस्तृत विधा है जिसमें हर बात को बारीकी से समझाया जा सकता है। उपन्यास मूलतः नवल अर्थात् नया साहित्यांग है। उपन्यास अन्य माध्यमों की अपेक्षा जीवन के हर पहलु को छुने वाला है। मुंशी प्रेमचन्द उपन्यास विधा को और लोकप्रिय बना दिया। इसलिये ये उपन्यास सम्राट कहलाये। उपन्यास के छः तत्व है।

1. कथावस्तु
2. चरित्र–चित्रण एवं पात्र
3. कथोपकथन या संवाद
4. देशकाल अथवा वातावरण

5. भाषा शैली

6. उद्देश्य

परिभाषाऐं

जैनेन्द्र कुमार,–पीड़ा में परमात्मा बसता है और मेरे उपन्यास आत्मपीड़न की कथा है।

आचार्य विश्वनाथ,–उद्गाढ़ोत्कालिकावतां स्व समायोपन्यास विभ्रम्भिणः

डॉ. धिरेन्द्र वर्मा,–यह वह वस्तु या कृति है। जिसको पढ़कर ऐसा लगे कि यह हमारी ही है। इसमें हमारे जीवन का प्रतिबिम्ब है। इसमें हमारी कथा, हमारी ही भाषा में कहीं गयी है।

साहित्य का वास्तविक संबंध जीवन से होता है और उपन्यास वह विधा है। जो इस या उस जीवन की महान घटनाओं को उजागर न कर दैनिक जीवन की घटनाओं को सूक्ष्मता से प्रस्तुत करता है।

सूर्यबाला एवं ममता कालिया दोनों ही प्रसिद्ध उपन्यासकार है। ये यथार्थवादी एवं सामाजिक उपन्यासकार है। इस शोध कार्य में दोनों उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी जीवन के प्रत्येक पक्षों का अध्ययन किया जायेगा।

मैंने अर्थात् शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध को पंचम् अध्यायों में विभाजित किया है।

साहित्य की समीक्षा

1. सूर्यबाला के कथा साहित्य का अनुशीलन – श्रीमती उर्वशी बंजारे पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय (छत्तीसगढ़)

सूर्यबाला ने कथा साहित्य में और अन्य विधाओं में किये गये साहित्य लेखन में समाज में उपेक्षित नारी शोषित, पीड़ित जन के दर्द को अपनी कलम से उजागर किया है। औद्योगिकरण टूटते–बिखरते संबंध, मानसिक प्रताड़ना और दो वर्गों के मध्य खाई को पाटने का काम किया है।

2. ममता कालिया के कथा साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन – शोधार्थी गायत्री शर्मा

ममता कालिया एक समकालिक सामाजिक रचनाकार है जिसने अपने कथा लेखन से साहित्य को समृद्ध किया है। इनकी रचनाऐं मूलतः नारी प्रधान व उसके इर्द–गिर्द घूमती है। साहित्य लेखन से नारी उत्थान के साथ समाज को एक नई सोच प्रदान की है। य उपन्यासकार व व्यंग्यकार के रूप में भी प्रसिद्ध हैं।

3. हिन्दी में नारी विमर्श : डॉ. शंकरलाल पुरोहित (लेखक)

समाज में स्त्री व पुरूष समान ही दोनों को पर्याप्त व समान अवसर मिलना या देना ही न्याय संगत है। किसी एक की उपेक्षा दूसरे के प्रति अन्याय है। आज भी पुरूष प्रधान समाज में नारी उपेक्षिता की पात्र ही रही है। साहित्य में दोनों अपना अपूर्ण योगदान दिया है। फिर सफलता सिर्फ पुरूष के माथे पर क्यों बांधी जाये। क्या यह कोमल हृदय सहनशील नारी के साथ अन्याय नहीं। नारी का योगदान हर क्षेत्र में रहा। आज से ही नहीं सदियों से फिर भी समाज उसे उसके शौर्य, धैर्य, यश को अपनाने में हिचकता क्यू हैं। हिन्दी में महिला रचनाकारों का अद्वितीय योगदान रहा है। हर प्रसिद्ध रचना का मूल स्त्री पर आधारित रहता है पर वास्तविकता से उसे दूर क्यों रखा जा रहा है। क्यों शोषण करना पुरूष व समाज की मंशा बन चुकी है।

4. ''हिन्दी महिला उपन्यास लेखन आश्रय नारीवाद'' 2014 – शोधार्थी – के. शोभारानी, हैदराबाद विश्वविद्यालय, विचित्र बोली

1980–2002 के मध्य लेखिकाओं ने समाज के प्रत्येक पहलू व समस्या को उजागर किया है। वह चाहे सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक व नैतिक पक्ष हो सभी पक्षों पर अपना मत रखा और यथार्थबोध में उपन्यास व अन्य विधा का सृजन किया है।

5. हिन्दी उपन्यास में गायिका की परिकल्पना – डॉ. सुरेश सिन्हा, अशोक प्रकाशन दिल्ली

उपन्यास विधा में नारी पात्र की कल्पना सहज है क्योंकि बिना इस पात्र के उपन्यास न रोचक होगा न मार्मिक। इसलिये कवियों व लेखकों ने नायिका प्रधान रचनाऐं अधिक की है।

प्रथम अध्याय

"सूर्यबाला व ममता कालिया का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

सूर्यबाला का जन्म 25 अक्टूबर 1943 को हुआ। उनके पिता वीरप्रताप सिंह श्रीवास्तव व माता श्रीमती केशर कुमारी श्रीवास्तव है। इनका संबंध मध्यमवर्गीय कायस्थ परिवार वाराणसी से था। माता–पिता के संस्कारशील, अनुशासित एवं परंपराओं में आस्था लेने से इनके मानस एवं व्यक्तित्व पर स्पष्ट झलक देखने को मिलती हैं। माता–पिता के उच्च शिक्षा प्राप्त होने के कारण शिक्षा का प्रभाव बचपन से ही रहा। बचपन में पिता की मृत्यु के बाद माता ही इनका सहारा बनी। पांचवी तक इन्होंने स्वयं पठन किया। उसके बाद की शिक्षा अर्थात् स्नातक की शिक्षा बनारस के आर्य महिला महाविद्यालय से प्राप्त किया। एम.ए. स्वाध्यायी छात्रा के रूप में शिक्षा ली। पीएच.डी. की उपाधि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से डॉक्टर बच्चन सिंह के निर्देशन में रीति साहित्य पर प्राप्त की। अपने अध्ययनकाल के समय जातिगत भेदभाव के कारण इनको अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। एक वर्ष के लिये ये बनारस विश्वविालय डिग्री कॉलेज में शिक्षिका रही। इनका विवाह श्री राजकुमार लाल से हुआ। अपने पति की नौकरी लगने के बाद सूर्यबाला ने व्याख्याता पद से त्यागपत्र देकर पारिवारिक जिम्मेदारियाँ संभाल ली। आज ये सुखी दाम्पत्य जीवन व्यतीत कर रही है। इनके दो पुत्र अभिलाष व अनुराग एवं एक पुत्री दिव्या है। सूर्यबाला अपने पति श्री राजकुमार के व्यक्तित्व से अत्यधिक प्रभावित हुई वे कहती है। ये अत्यधिक मेहनती एवं संस्कारशील है। सूर्यबाला जी को समय के साथ चलना बखूबी आती है। इसीलिये आज वे उन बुलन्दियों को छू रही है। जिनकी वे वास्तविक हक रखती है ये बचपन से ही प्रतिभाशाली छात्रा रही है। इन्होंने छठी कक्षा से ही लेखन कार्य आरंभ कर दिया था। साहित्य की रचना ये प्रक्रिया में आंतरिक स्त्रोतों के प्रेरक तत्व अपने माता–पिता व परिवार को माना है। सूर्यबाला जी ने अब बचपन में अपने घर

से बाहर जाती अर्थी को देखा तो इस दृश्य का उनके मन पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा और चित में प्रश्न उठा, क्या हम भी क्या मैं भी एक दिन नहीं रहूंगी। इसी बाल प्रश्न से उनका लेखन प्रारंभ हुआ। सूर्यबाला के साहित्य एवं जीवन पर प्रेमचन्द प्रसाद, टॉलस्टॉय, लूक्सा, शरदचन्द्र, फणीश्वरनाथ रेणु, शिवाजी सावंत, पन्नालाल पटेल (गुजराती) आदि विद्वानों का प्रभाव रहा है। लेकिन इन्होंने स्वयं यह बात स्वीकार की है कि जीवन को देखने की दृष्टि मुझे गांधीवादी विचारधारा की समीप ज्यादा लेकर जाती है। क्योंकि बदलाव को लेकर विद्रोह की अपेक्षा विवेक के महत्व को स्वीकारती है। क्योंकि जीवन में अनेक परिस्थितियाँ ऐसी है। जिन्हें विद्रोह की अपेक्षा विवेक से सुलझाया जा सकता है। सूर्यबाला में समाज के लेखन का प्रेरक तत्व माना है। क्योंकि समाज से तटस्थ रहकर कोई साहित्य सृजना नहीं हो सकती। ना उसे बुलन्दी पर पहुंचाया जा सकता है। साहित्य समाज का दर्पण है। जो समाज में घटित होने वाली घटनाओं का साहित्य के माध्यम से उजागर किया जाता रहा है। साथ ही लेखिका ने दहेज प्रथा जो परम्परा के साथ में चली आ रही थी उसका भी विरोध किया है। विपरीत परिस्थितियों में सूर्यबाला ने अपने भाग्य पर भरोसा न कर कर्म पर ज्यादा भरोसा दिखाया। प्रयोगान्वेषी दृष्टि होने के कारण जनमानस की वेदनाओं, कुण्ठाओं व समस्याओं को अपनी लेखनी में उतारने में सिद्धस्त रही है। इन्होंने अपनी आत्मकथा में इस बात को स्वीकारा है कि मेरे लेखन का एक मात्र लक्ष्य आत्मीयता, मनुष्यता को बचा लेना है जिसे आज स्वार्थी दृष्टिकोण बड़ी ही बेरहमी से कुचल रहा है उसे बंजर बना रहा है। इन्होंने सामाजिक हितों को ध्यान में रखते हुए जातिवाद सम्प्रदायवाद, आदि से स्तर राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना भरने का कार्य भी अपनी लेखनी के माध्यम से किया है। सूर्यबाला ने अपने लेखन में यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए व्यंग्य रूप में भी अपनी बात को समाज के सामने रखा है।

सूर्यबाला जी ने अपने साहित्य से समाज का कल्याण किया है। जो पाठकों के लिये ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी रहा है।

उपन्यास

1. मेरे संधिपत्र 1977
2. सुबह के इंतजार तक 1980
3. अग्निपंथी 1987
4. यामिनी कथा 1991
5. दीक्षांत 1992
6. कौन देस को वासी

कहानी संग्रह

1. एक इन्द्रधनुष जुबेदा के नाम
2. दिशाहीन 1981
3. थाली भर चाँद 1988
4. मुडेर पर 1990
5. साँझवती 1995
6. कात्यायनी संवाद 1996
7. इक्कीस कहानियां,
8. पांच लम्बी कहानियां 2003
9. मानुष–गंध 2003
10. सिस्टर! प्लीज आप जाना नहीं।
11. गौरा गुनवन्ती

आलेख

1. चुनौतियों के घेरे में आज का स्त्री–विमर्श।

डायरी

1. देस ने रहेंगे, परदेस में रहेंगे।

यात्रा संस्मरण – एक छोटी यात्रा : एक नन्ही सहयात्री।

बाल साहित्य – झगड़ा निपटाकर दफ्तर।

मेरे संधिपत्र

इस उपन्यास को 1977 में प्रकाशित करवाया गया। यह सूर्यबाला के जीवन का आधार स्तंभ साबित हुआ। यह नारी विषयक दृष्टिकोण के साथ दण्डित है। इस उपन्यास मध्यवर्गीय परिवार की नायिका शिवा के आस–पास घूमता है। जिनका विवाह एक रईस अधेड़ उम्र के व्यक्ति के साथ कर दिया जाता है। जिसके दो बेटियां भी है। शिवा एक भारतीय नारी है। विवाह को पवित्र बंधन मानते हुए वह अपनी सौतेली बेटियों को सगी बेटियों की तरह पालती–पोषती है। पति की मृत्यु के बाद अपना संपूर्ण जीवन अपने कर्तव्य निर्वहन में व्यतीत कर देती है। और अपनी पीड़ा को अन्दर ही छुपा लेती है। इसमें अनमोल विवाह और उससे उत्पन्न समस्याओं के बारे में भी बताया गया है।

सुबह के इंतजार तक

इसका प्रकाशन 1980 में हुआ। यह नायिका प्रधान सामाजिक उपन्यास है। यह उपन्यास ''मानू'' नामक बलात्कार पीड़ित लड़की के इर्द–गिर्द घुमता है। मानू एक सुन्दर शिक्षित व साहसी व स्वाभिमानी होने के साथ ही संघर्षशील भी है। अपने उपर हुए अन्याय एवं अत्याचारों का खुलकर विरोध करती नजर आती है। वह आर्थिक समस्याओं से जूझती हुई भी अपने भाई को

डॉक्टर बनाती है। एक बलात्कार पीड़िता को इस समाज में कभी सम्मान नही दिया जाता। उसे सदैव हीन दृष्टि से ही देखा जाता है। उसी पर दोषारोपण किया जाता है। मानू को भी समाज के इस अत्याचार का सामना करना पड़ा। लेकिन नायिका ने हार नहीं मानी वह लगातार संघर्ष करती रही अपने सम्मान के लिये समाज की घृणित सोच का विरोध करती रही।

अग्निपंखी

इसका प्रकाशन 1987 में हुआ। इसकी कथावस्तु एक विधवा नारी व उसके अर्धशिक्षित पुत्र की कथा को रेखांकित करती है। इसमें महानगरीय जीवन व ग्रामीण जीवन के मध्य समन्वय को उजागर किया है। इस उपन्यास के नायक जयशंकर को आर्थिक समस्याओं व अभावों से संघर्ष करता हुआ दिखाया गया है। इसमें बेरोजगारी जैसे समकालीन मुद्दों को रेखांकित किया है। एक शिक्षित बेरोजगार युवा दर–दर की ठोकरे खाता है और लोगों के ताने सुनने पड़ते है। रोजगार की तलाश में शहरों की और उन्मुख होते है। अनैच्छिक जीवन शैली व्यापन करते। अपनी वास्तविक स्थिति से दूर होते हुये समाज से कट से जाते है। ना ही अपनी समस्याओं को बता पाते है। इसमें सूर्यबाला ने युवा वर्ग की सोच के साथ ही संयुक्त परिवार की समस्याओं एवं सम्पति के लिये होने वाले क्लेष को भी दिखाया है।

यामिनी कथा

इसका प्रकाशन 1991 में हुआ। यह नारी विषयक दृष्टिकोण व पुरूष मानसिकता का लेकर रचा गया है। यह उपन्यास यामिनी नायक स्त्री पर आधारित है। इसमें यामिनी एक भावुक व संवेदनशील पात्र है। जो सुखी जीवन की आशा में स्वार्थी पुरूष से विवाह कर लेती हैं। परंतु इसका पति एक नाविक है। उसे आरामदेह जीवन पसन्द, शादी उसके लिये कोई महत्व नहीं रखती। इसी कारण इसका दाम्पत्य जीवन सुखमय नहीं रहता। वह अपने पति

से प्रेम पाना चाहती है। परंतु कैंसर के कारण उसकी मृत्यु हो जाती है। इस दौरान वह आर्थिक संकट से जुझती है। और अंधकारमय भविष्य के बीच निखिल के प्रपोज को स्वीकार कर लेती है। अब यामिनी के लिए प्रौढ़ माँ से नई दुल्हन की भूमिका निभाना आसान नहीं होता। इस दौरान यामिनी चुनचुन नामक बच्चे को जन्म देती है। अब निखिल का झुकाव पुतूल की अपेक्षा चुनचुन की तरफ ज्यादा हो जाता है। यामिनी अब इन तीनों के मध्य सामंजस्य स्थापित करवाने की चाह में स्वयं को पूरी तरह खो देती है। इसमें मध्यवर्गीय व अभिजात वर्ग की संवेदनाओं को बारीकी से उकेरा है।

दीक्षांत

सन् 1992 में प्रकाशित हुआ। यह यथार्थपूर्ण उपन्यास है। जो वर्तमान शिक्षा पद्धति पर व्यंग्य करता है इसका नायक दीक्षांत एक ऐसे शिक्षक है। जो अपने कर्तव्यों एवं सिद्धान्तों के लिये वह राजनेताओं और सामाजिक बुराईयों का शिकार होता चला जाता है। गोल्ड मेडलिस्ट होते हुए भी उन्हें तृतीय श्रेणी के विभागाध्यक्ष से प्रताड़ना झेलनी पड़ती है। नायक अपनी शिक्षा से राष्ट्र निर्माण में अपनी भागीदारी निभाना चाहता है। परन्तु महाविद्यालय प्रशासन द्वारा उन्हें निरन्तर उपेक्षित व प्रताड़ित किया जाता है। एवं पद छोड़ने के लिये विवश किया जाता है। इस मानसिक समस्या से जूझते हुये वे गिर जाते है। जिससे उनकी मृत्यु हो जाती है। इनकी अकाल मृत्यु से महाविद्यालय में सियासत होने लगती है। जिससे शैक्षिक वातावरण दुषित होता चला जाता है। वर्तमान शिक्षा में और मानवीय व शैक्षिक मूल्यों में गिरावट को व्यंग्य रूप में दर्शाया है।

ममता कालिया का जन्म 2 नवम्बर 1940 में वृन्दावन (यू.पी.) में हुआ था। इनका सारा बचपन मथुरा में व्यतीत हुआ है। वे अपने बचपन को याद करती हुई यमुना नदी को अधिक याद करती है। उसकी शान्त मुद्रा उसे आकर्षित करती रही है। सम्पन्न परिवार में जन्म लेने के कारण इनका बचपन सभी

सुख–सुविधाओं से भरपूर था। इनके पिता का नाम विद्याभूषण अग्रवाल व माता इन्दूमती थी। इनकी माताश्री रूढ़ी परम्पराओं को मानने वाली थी। पिता गाजियाबाद कॉलेज के प्रिंसिपल थे व साथ में लेखन कार्य भी करते थे। इनकी साहित्य में विशेष रूचि थी। जिसके कारण ममता जी को प्रारंभ से ही साहित्यिक माहौल प्राप्त हुआ। स्कूली शिक्षा का प्रारंभ गाजियाबाद से हुआ व बाद में स्कूली पढ़ाई कॉन्वेन्ट में अंग्रेजी माध्यम से हुई। दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम.ए. की उपाधि ली।

पारिवारिक जीवन

लेखिका का विवाह 12 दिसम्बर 1964 को दिल्ली में लेखक रवीन्द्र कालिया के साथ हुआ। शादी के बाद मुंबई के साहित्यिक जीवन से इनका परिचय हो गया था। इन्होंने एक–दूसरे के लेखन कार्य में कभी बाधा नहीं पहुंचायी। रवीन्द्र कालिया कहानी के प्रवर्तक है। इन्होंने अपने दाम्पत्य जीवन में सामंजस्यपूर्ण स्थितियों को महत्व्पूर्ण माना है।

साहित्य आरंभ

सन् 1968 में बी.ए. की पढ़ाई के दौरान ही इन्होंने कविताएं लिखना शुरू कर दिया था। इनकी पहली कविता 'प्रयोगवादी प्रियतम' थी जो 'नई दुनिया' अखबार में छायी थी यह अकविता थी उस समय इस बारे बात करना ऊषा ने साहस का ही कार्य माना। इनकी प्रारंभिक कहानियों में इनका गुस्सा व सपाट बयानी स्पष्ट देखने को मिलती है। ''उपलब्धि'' शीर्षक नामक कहानी को पुरस्कार प्राप्त हुआ। ममता कालिया कि प्रथम कहानी ''यों ही मर जाएंगे'', ''ज्ञानोदय'' पत्रिका में छपा था।

सम्मान एवं उपाधियां

ममता कालिया का साहित्य समृद्ध रहा है। इनको अनेक सम्मानों एवं पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। सन् 1963 में साहित्यिक हिन्दुस्तान,

दिल्ली की ओर से सर्वश्रेष्ठ कहानीकार, यशपाल, पुरस्कार, साहित्य परिषद, पंजाब का पुरस्कार, अभिनव भारती पुरस्कारों को प्राप्त किया है।

उपन्यास

1. बंधर 1971
2. नरक दर नरक 1975
3. लड़कियाँ–अप्राप्य
4. प्रेम कहानी 1980
5. एक पत्नी के नोट्स 1994
6. दुक्खम् सुक्खम्

कहानी संग्रह

1. छुटकारा 1983
2. सीट नंबर छह 1978
3. एक अदद औरत 1979
4. प्रतिदिन 1983
5. जांच अभी जारी है 1989
6. बोलने वाली औरत
7. मुखौटा
8. निर्मोही
9. उसका यौवन 1983

10. थियटर रोड़ के कोवे 2006

11. पच्चीस साल की लड़की 2006

कविता संग्रह

1. खाँटी घरेलू औरत

2. कितने प्रश्न करूं

3. नरक दर नरक

4. प्रेम कहानी

नाटक संग्रह

1. यहाँ रहना मना है

2. आप न बदलेंगे

संस्मरण – कितने शहरों में कितनी बार

अनुवाद – मानवता के बंधन (उपन्यास सॉमरेट मॉम)

बेघर

यह उपन्यास समाज में मध्यकाल से लेकर आज तक विचारों में संकीर्णता और दकियानूसी सोच को उजागर करता है। इसके नायक परमजीत ऐसे पात्र है जो अल्पज्ञानी है। पूरा ज्ञान न होने के कारण उसकी हरकते व व्यवहार हास्यपद है। वह अहंकारी, शक्की मिजाज का है। उच्च वर्ग में उत्पन्न होने से उसका व्यवहार ''अधगल गमरी छलमत जाये'' वाला मुहावरा सटीक बैठता है। उसकी सोच दकियानूसी है पर दिखावा वह पूरा आधुनिकता का करता है। अपने शकी स्वभाव के कारण अपना विवाह विच्छेद कर एक ऐसी स्त्री से विवाह करता है जो फूहड़ व स्वार्थी है अंत में नायक मृत्यु को प्राप्त

हो जाता है। जिससे उसके मनोवृत्ति के वशीभूत होकर किया जाने वाला शक से बर्बादी को न्यौता दे लेता है।

नरक दर नरक

इस उपन्यास में मध्यम वर्गीय समाज में फैली हुई बेकारी, भुखमरी, गरीबी, बेरोजगारी समस्या से घिर कर बना नरक जैसे जीवन को उजागर किया है। इस सबसे व्यक्ति के अन्दर जो ऊब हीनता खिन्नता क्रोध निराशा उत्पन्न होती है उसे ममता कालिया ने बड़े सटीक ढंग से व्यक्त किया है।

प्रेम कहानी

सन् 1980 में प्रकाशित हुआ। इसमें ममता जी ने एक मध्यम वर्गीय डॉक्टर के व्यस्त जीवन व पति–पत्नी के बीच बढते तनाव व दुरियों का वर्णन किया है और साथ ही यह भी बताने का प्रयत्न किया कि पत्नियाँ अपने डॉक्टर पति को पैसे कमाने वाली मशीने समझने लगी है। जो इनके बीच तनाव को उत्पन्न करने का मुख्य कारण है।

एक पत्नी के नोट्स

इस उपन्यास का नायक संदीप है। जो आईएएस बन जाता है। वह कविता नाम की लड़की से विवाह करता है। जो यूनिवर्सिटी में सहायक प्रोफेसर है। इसमें नायक संदीप एक घमण्डी शकी स्वभाव का है। जो अपने समक्ष दूसरों को तुच्छ समझता है। अपनी पत्नी पर भी पूर्ण नियंत्रण चाहता है। उसे जलील तक कर देता है। उसकी मानसिकता नारी को लेकर विक्षिप्त है। परंतु दूसरों के समक्ष उसकी पत्नी कम न रहे चाहे उसके लिये दिखावा ही क्यों न करना पड़े। कविता अपने प्रति इस व्यवहार से अत्यधिक दु:खी एवं पीड़ित है। उसे घुटन महसूस होती है। वह अपने–आप को सभा से दूर रखकर मानसिक शांति पाना चाहती है।

द्वितीय अध्याय

सूर्यबाला व ममता कालिया के उपन्यासों में नारी का समाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व नैतिक पक्ष

सूर्यबाला एवं ममता कालिया दोनों महिला उपन्यासकारों ने अपने–उपन्यासों में नारी विषयक मुद्दो पर चर्चा की है। समाज में उसकी अस्मिता को पुनःस्थापना हेतु प्रयास किया है। तथा स्वतंत्रता के बाद देश में उसकी स्थिति बदल रही है। वह पुनः अपने सोये वजूद को टटोलने लगी है। जो समाज की विकृत सोच के कारण धुंधला सा गया था। आज फिर से अपने व्यक्तित्व को प्रकाश में लाना चाहती है। सूर्यबाला एवं ममता कालिया ये दोनों ही पुरानी परम्पराओं को तोड़कर नवीन युग में अपने पात्रों को सहज एवं सम्मानीय रूप से स्थापित करना चाहती है।

सूर्यबाला व ममता कालिया के उपन्यासों में नारी का सामाजिक पक्ष

दोनों ही उपन्यासकार ऐसे समय में रही। जहाँ नारी विरोधी वातावरण था। जहाँ समाज नारी को केवल उपेक्षित समझता था। पितृसत्तात्मक परिवारों में स्थिति और भी दयनीय थी। स्त्री मात्र घर की वस्तु समझी जाती रही है। समाज के बन्धनों से वह स्वयं को बाहर निकाल नहीं पाती और उसकी स्वतंत्रता किसी को सहाय नहीं। इन्हीं परिवेशों में वह संपूर्ण जीवन व्यक्त कर देती है। समाज के संपूर्ण विकास के लिये दोनों स्त्री–पुरूष का सहयोग होना अनिवार्य है। एक की उपेक्षा समाज को पंगु बना देती है। और पंगुता किसी भी समाज का उत्थान नहीं सिद्ध हो सकता। ''मेरे संधिपत्र'' की नायिका शिखा सामाजिक कुरीति अनमेल विवाह का शिकार होती है। जिससे न उसका पूर्ण मानसिक विकास हो पाता है न सामाजिक। वह समाज की रीतियों की पालना करने में स्वयं को खो देती है। वही बेघर उपन्यास में मध्यम वर्गीय समाज जो

न पूर्ण शिक्षित है न पूर्ण अशिक्षित। उसकी अर्द्धशिक्षित की स्थिति उसे वास्तविक विकास से दूर करती है। ऐसा समाज नवीन परिवर्तनों को सहज स्वीकार नहीं कर पाता। वह उस विकास में बाधक बनता है। वर्तमान परिस्थितियां भी ज्यादा आशाजनक नहीं है। क्योंकि सुबह के इंतजार तक की नायिका मानू की तरह आज भी दैहिक शोषण की शिकार को समाज न अपनाता है। न उसे जीने देता है। पुरूष की वैश्यपन का परिणाम भी नारी से ही वसूलता है समाज जो न्यायोचित नहीं है। नरक दर नरक, एक पत्नी के नोट्स, अग्निपंखी, यामिनी कथा, दीक्षांत, दुक्खम सुक्खम् उपन्यासों में घृणित सामाजिक परिवेश व नारी को इन सबसे से मुक्ति पाने का प्रयास हम देख सकते है।

सूर्यबाला व ममता कालिया के उपन्यासों में नारी का आर्थिक पक्ष

अर्थ किसी भी स्थिति से उभरने में सहायक होता है। आर्थिक परतन्त्रता शोषण का आधार है। नारी ही नहीं पुरूष भी आर्थिक समस्याओं से घिरने पर निराशा, तनाव महसूस करता है। आर्थिक रूप से सशक्त व्यक्ति अनेकों शोषण से वंचित हो जाता है। नारी के शोषण का मूल आधार उसका दूसरों पर निर्भर होना रहा है। अर्थ पक्ष सुखी जीवन का मेरूदण्ड है। समाज निर्माण में अर्थ महत्वपूर्ण स्थान व योगदान रहा है। अर्थहीन व्यक्ति समाज में अपने को उपेक्षित सा मानता है। हीनता उसके हृदय में घर कर लेती है। और इस समस्या को दूर करने के लिये कभी–कभी गलत मार्गों का अनुसरण व अपराधों के संसार में चला जाता है। अगर नारी की बात करते हैं। तो यह स्थिति और भी चिन्ताजनक है कि समाज ने उसे पहले ही जकड़ा हुआ है और जब दूसरों पर आश्रित होना न केवल उसके लिये मानसिक बल्कि दैहिक शोषण का भी आधार बन जाता है। दोनों उपन्यासकारों के उपन्यासों में पात्रों को आर्थिक समस्या से जूझता हुआ दिखाया है। आर्थिक समस्या के कारण पारिवारिक संबधों को भी बिखरते दिखाया है। आर्थिक कमजोरी नारी को बहुत बेबसी का

अहसास करवाती है। परन्तु आज की नारी ने इस नब्ज को पहचाना और स्वयं को स्वतंत्र करने के लिए अर्थ पक्ष को सुदृढ़ करने का प्रयास किया है। आज की नौकरी पेशा पत्नी अपने ऊपर अत्याचारों का प्रतिकार करती है। वह हर परिस्थिति से निपटने के लिये खुद को तैयार कर रही है। जो दोनों उपन्यासकारों का भी मूल्य ध्येय है।

सूर्यबाला व ममता कालिया के उपन्यासों में नारी का सांस्कृतिक पक्ष

ममता कालिया व सूर्यबाला एक समकालीन सशक्त उपन्यासकार है। इनके रचनात्मक प्रतिभा का प्रेम नारी पात्रों को दिया जा सकता है। क्योंकि ये नारी पाप परम्परावादी मान्यताओं, रीतियों को सिरे से नकार कर आधुनिकता का बोध कराते है। इनके उपन्यासों का विषम तत्कालीन व वर्तमान विसंगतियों को लेकर रहा है। इन दोनों उपन्यासकारों ने साहित्य में नैतिक, अनैतिकता, पवित्रता से दूर नारी को केवल एक सहज मानव रूप में स्थापित करने का प्रयत्न किया। व्यापक रूप से किसी समाज या समुदाय के संस्कार ही उसकी संस्कृति कहलाती है विकृति रूढ़ियों के विरोध में सांस्कृतिक चेतना ही कार्यरत रहती है। वर्तमान में सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन आया है। उससे नारी अपने को असहाय सी मानती है। इन्होंने सांसकृतिक पक्षों में अनेक रीतियों को नारी विकास में बाधक माना है।

सूर्यबाला व ममता कालिया के उपन्यासों में नारी का नैतिक पक्ष

सूर्यबाला व ममता कालिया दोनों के साहित्य में नैतिक मूल्यों की स्थापना की गई है। इनके उपन्यास पात्रों में मानवीय संवेदना नजर आती है। मेरे संधि पत्र की शिवा अपनी सौतेली पुत्रियों से भी आत्मीयता व प्रेम का भव रखती है उनके प्रति अपने कर्तव्यों का सहज निर्वहन करती है। और अधेड़ उम्र के व्यक्ति से विवाह होने पर भी उसे ही अपना सब–कुछ मान कर पूर्ण

रूप से समर्पित रहती है। दीक्षांत उपन्यास का नायक अपने नैतिक मूल्यों के लिये संघर्ष करता हुआ मृत्यु को प्राप्त होता है।

वही दूसरी और ममता कालिया के पात्र भी नैतिक मूल्यों को दर्शाते है। अनुकूल कार्य व धर्मानुकूल व्यवहार ही नैतिकता कहलाता है। नैतिकता के मापदण्ड समय, परिस्थिति की वेग में बदलते है। क्योंकि जीवन की मान्यताऐं नए संस्कार प्राप्त करती है। इनके उपन्यासों में समाज के अनैतिक कार्यों पर प्रहार किया है।

तृतीय अध्याय

सूर्यबाला व ममता कालिया के उपन्यासों में जीवन दर्शन

सूर्यबाला के उपन्यासों में जीवन दर्शन

सूर्यबाला के साहित्य में जीवन दर्शन को गांधीवादी एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण से जीने का प्रयत्न किया गया है। व्यक्तिगत जीवन में भी इन्होंने मानवीय संवेदना को महत्व देते हुये जीवन में अच्छाईयों को एक नया आयाम देने का प्रयत्न किया है। जीवन में उपस्थित सभी समस्याओं का निराकरण कर शान्तमय जीवन की कामना अपेक्षित है। इनके उपन्यास पात्र भी उसी कसमकस में शान्ति प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील है। सभी बुराईयों का प्रतिकार कर जीवन के मूल ध्येय की और अग्रसर होना न केवल व्यक्ति मात्र के लिये लाभदायक है बल्कि समाज की संयता और सम के लिये भी आवश्यक तत्व है मार्क्सवादी, साम्यवादी विचारों की अपेक्षा बुद्धत्व की ओर उन्मुख होना श्रेयकर होगा। यही चिन्तन मनन किया है।

ममता कालिया के उपन्यासों में जीवन दर्शन

ये उग्र व गुस्सैले स्वभाव कि थी परन्तु किसी परिवर्तन के लिये विद्रोह की अपेक्षा विवेक को महत्व दिया है। क्योंकि क्रोध बुद्धि को नष्ट करता है। और बुद्धि हमें बुद्धतत्व तक लेकर जाती है। सौहार्द्रपूर्ण जीवन ही सुखमय है। सामंजस्य उसकी पहली सीढ़ी है। समर्पण व त्याग व प्रेम उसके तत्व है। जीवन निरन्तर चलने वाला है। क्षणिक स्थिरता का द्योतक हो तो भी जीवन का पहलु बदलता ही रहता है। यह जीवन के यथार्थ को परखने का दृष्टिकोण विकसित करता है। यह हमें परम् सत्य और सिद्धान्तों और उनके कारणों से अवगत करवाता है। यह सामाजिक चेतना के रूपों में से है। जो हमारे दृष्टिकोण का निर्धारण करता है। स्वत्व, समाज, मानव चिन्तन तथा संज्ञान की

प्रक्रिया का विज्ञान है। जो इनके पात्रों में कहीं न कहीं स्पष्ट दिखाई दे जाता है।

अपने उपन्यासों में पात्रों के माध्यम से अपने इस उद्देश्य को पाना चाहा और समाज में स्थापित किया।

अध्याय चतुर्थ

सूर्यबाला व ममता कालिया के उपन्यासों में नारी का विद्रोही स्वर

सूर्यबाला व ममता कालिया के नारी पात्र अपनी वर्तमान परिस्थितियों से छटपटाहट रही है। वर्तमान नारी विरोधी परिवेश उन्हें अपनी दयनीय परिस्थितियों से बाहर निकलने के लिये प्रेरित कर रहा है। ''सुबह के इंतजार तक'' की नायिका मानू पुरूष की पशुता का शिकार हो जाती है। परन्तु उसके साथ बलात्कार किया जाता है। समाज में उसको हेय दृष्टि से देखा जाता है। परन्तु वह समाज की अपने प्रति सोच को नजरअन्दाज कर अपने भाई को पढ़ा–लिखाकर डॉक्टर बना देती है। और समाज में अपने प्रति बनाये गये नजरियों को बदलने का प्रयास करती है। लेकिन यह समाज उसे सम्मान नहीं दे पाता। यामिनी कथा उपन्यास में यामिनी अपने पति से प्रेम चाहती है। परन्तु वह उसे नहीं मिल पाता इसी कशमकश में चलते हुये जब इसके पति की मृत्यु हो जाती है। तो वह आधुनिक नारियों की भाँति अपने भविष्य को सुरक्षित करने के लिये उससे विवाह कर लेती है। वह पुरानी रीतियों से चिपके रहकर अपना जिन्दगी बर्बाद नहीं करती। अग्निपंखी उपन्यास में विधवा नारी का संघर्ष भी दिखाया है। जिसमें विधवा के प्रति जो धारणा समाज में सदियों से गढ़ी हुई है। उसे लेखिका तोड़ने का प्रयत्न करती है। ममता कालिया के ''बेघर'' उपन्यास में जब नायक परमजीत अपने शकी स्वभाव के कारण पत्नी को प्रताड़ित करता है और विवाह विच्छेद कर लेता है। लेकिन इनकी पत्नी भी इनके अत्याचारों को विरोध करती दिखाई देती है।

प्रेम कहानी उपन्यास में नायक डॉक्टर की पत्नी स्वार्थी व आधुनिक मनोवृत्ति वाली उन महिलाओं में शामिल हैं। जो आर्थिक पक्ष को ज्यादा महत्व देती है। ये नगरीय महिलाओं का प्रतीक है। ''एक पत्नी नोट्स'' का नायक संदीप आईएएस है वह पत्नी कविता पर अत्याचार करता है। जिससे वह दुःखी है। परन्तु वह उसका विरोध भी करती है वह स्वयं आर्थिक रूप से स्वतंत्र है।

इसलिये कुछ हद तक यह बात संदीप भी समझता है। दोनों उपन्यासकार अपने नारी पात्रों के माध्यम से समाज या पितृसत्तात्मक समाज के अत्याचारों का पुरजोर विरोध किया है। वे नारी की स्वतंत्रता की पक्षधर है।

शोध के उद्देश्य

1. सूर्यबाला व ममता कालिया के व्यक्तित्व व कृतित्व का अध्ययन।
2. सूर्यबाला व ममता कालिया के उपन्यासों में नारी का सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व नैतिक पक्षों का अध्ययन।
3. सूर्यबाला व ममता कालिया के उपन्यासों में जीवन दर्शन।
4. सूर्यबाला व ममता कालिया के उपन्यासों में नारी का विद्रोही स्वर।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व

1. उद्देश्य प्राप्ति के लिये सर्वोत्तम।
2. ज्ञान के विकास में अत्यन्त सहायक।
3. समाज को नई दिशा व गति प्रदान करने में सहायक।
4. सामाजिक पक्षों को संतुलित व विकास में सहायक।
5. मानव जाति के कल्याण के लिये आवश्यक।
6. शोध या अनुसंधान से व्यावहारिक समस्याओं का निराकरण।
7. शोध या अनुसंधान से विविध विषयों का गहन और सूक्ष्म ज्ञान प्रदान करता है।
8. साहित्य को समृद्ध करने में सहायक।
9. लैंगिक असमानता को समझने में सहायक।
10. नारी भूमिका का समाज में योगदान को समझने में सहायक।
11. शोध या अनुसंधान द्वारा सामाजिक कुप्रथाओं एवं रीतियों को उजागर करने में सहायक।

12. शोध या अनुसंधान से उपन्यास विधा से विस्तृत अभिव्यक्ति के महत्व को प्रदर्शित करने में सहायक।

शोध विधि

1. इस शोध कार्य के लिए सर्वप्रथम उपन्यास साहित्य विधा का अध्ययन करना होगा। जिसमें प्रारंभिक उपन्यासों से लेकर आज तक के उपन्यास विकास यात्रा को समझना होगा।
2. उपन्यास के विभिन्न तत्वों को समझकर उनका समाज के परिपेक्ष में अध्ययन करना।
3. सूर्यबाला व ममता कालिया के उपन्यासों में नारी से संबंधित कार्यों का तुलनात्मक व गहन अध्ययन किया जायेगा।
4. शोध के लिये वर्णनात्मक, विवरणात्मक विधियों एवं फ्लैश पद्धति का पूर्ण सहयोग लिया जायेगा।
5. इस शोध कार्य हेतु प्रश्नावली विधि भी उपयुक्त रहेगी।

पंचम अध्याय

निष्कर्ष

उपन्यास साहित्य विधाओं में अत्यधिक परिष्कृत विधा है। तुलनात्मक अध्ययन हेतु उपयोगी एवं कारगर है। यह विधा विस्तृत है, प्रत्येक पहलु को बारीकी से उजागर करने में सहायक है। अगर हमें एक समस्या को उजागर करना हो तो कहानी विधा उपयोगी है और अगर प्रत्येक समस्या पर दृष्टिपात करना है तो उपन्यास विधा है। दोनों उपन्यासकारों ने इस विधा का प्रयोग कर समाज में निहित कुरीतियों, अंधविश्वासों, मानवीय मूल्यों के विघटन एवं क्रूरता की जो मानस छवि है। उसे प्रकाश में लाया है सूर्यबाला ने अपने सभी उपन्यासों में अनमेल विवाह, उससे उत्पन्न मानसिक, सामाजिक आर्थिक यन्त्रणा पर लेखन किया और समाज को उससे अवगत करवाया है। सूर्यबाला जी ने मानू नायिका के माध्यम से नारी के प्रति समाज की घृणित सोच एवं जघन्य अपराध जो अक्षम्य है पुरूष की पशुता उसकी कामुकता एवं व्यभिचारिता को भी व्यंग्य ढंग से बताया। साथ ही महानगरीय जीवन व ग्रामीण जीवन के मध्य सामंजस्य के अभाव को भी दर्शाया है। मध्यम वर्गीय परिवार की समस्या सम्पति के लिये होने वाले द्वेष–क्लेष व बेरोजगारी के मुद्‌दे को भी उठाया है। सूर्यबाला ने बताया कि सम्पति के लिये किस तरह षडयंत्र रचे जाते हैं जो न केवल नैतिकता का पतन करते हैं। बल्कि दूसरी और मानसिक शान्ति व पारिवारिक सुख भी नष्ट हो जाते हैं। वास्तविकताओं से हटकर जब हम स्वार्थ वशीभूत होकर कोई निर्णय लेते हैं तो वे हमें बाद में अस्थिर कर देते हैं। जैसे यामिनी कथा उपन्यास की पात्र यामिनी है। दीक्षांत जैसे उपन्यास के माध्यम से वर्तमान शिक्षा पद्धति पर भी प्रहार किया है। जो वास्तविक मूल्यों का सृजन न कर गुटबाजी को पोषित कर रही है। आज भी हमें अनेकों ऐसे उदाहरण दिखाई देंगे। जो अपने सिद्धान्तों के संरक्षण एवं वर्तमान अंग्रेजी शिक्षा पद्धति के कुचक्र में पीसते जा रहे है। जिससे राष्ट्रीय

मूल्यों की स्थापना नहीं हो पा रही है। सब व्यक्तिगत स्वार्थों में मग्न हो गये है। आज भी हम देखते हैं कि ऊँचे–ऊँचे शिक्षण संस्थानों में राष्ट्र मूल्यों की अपेक्षा राष्ट्र विरोधी मूल्यों का समर्थन दिया जाता है। यहाँ बुद्धिजीवी वर्ग स्वतंत्रता एवं आत्म अभिव्यक्ति के नाम पर अपनी सोच को रोपित करने का प्रयास करता है। दूसरी और ममता कालिया ने भी अपने साहित्य में इन समस्याओं पर पूरजोर किया है। ममता कालिया ने उपन्यास विधा में ही नहीं सभी विधाओं में तीव्र आवेग व सपाटबयानी के साथ समाज से बुराईयों को नष्ट करने का आह्वान किया है। इनका साहित्य लेखन विस्तृत है। साहित्य लेखन की प्रेरणा समाज से, समाज में पीड़ित जन एवं शोषित वर्ग से मिली। नारी होते हुये दूसरी नारी की पीड़ा को मूकदर्शक न बनकर उसे अपनी लेखनी का आधार बनाया। ये प्रारंभ से ही साहित्य प्रेमी रही है। क्योंकि पारिवारिक वातावरण उन्हें मिला। समाज में नारी को सम्माननीय स्थान दिलाने के लिये ये सदैव तत्पर रही है। पुरूष के अहं को इन्होंने पोषित नहीं किया बल्कि लेखन के माध्यम से उसे चकनाचूर कर दिया है। ममता कालिया ने भी समाज में व्याप्त बेरोजगारी, भूखमरी, दयनीयता, खिन्नता, निराशा, हताशा, अपराधी, पति–पत्नी के बीच बढ़ते तनाव असामंजस्यता और ऊब व निराशा को चित्रित किया है। इनमें अपने लेखन के प्रति पूर्णतः समर्पित पाया जाता है। अपने अनुभवों को ही अपने लेखन कार्य को सुदृढ़ एवं सशक्त बनाने में सफल रही है। इन्होंने मानवीय मूल्यों में विश्वास प्रकट किया है और समाज की नब्ज को पकड़ा है। जिससे दोनों उपन्यासकार साहित्य के शिखर पर पहुँच सकी।

मेरे द्वारा किया जाने वाला शोध कार्य न केवल उपन्यासकारों बल्कि भावी शोध के लिये अग्रसर शोधार्थियों के लिये भी बहुउपयोगी सिद्ध होगा ऐसा मुझे विश्वास व पूर्ण आशा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आधुनिक हिन्दी उपन्यास : उद्भव और विकास – डॉ. बैचेन शर्मा, पृ. 5
2. हिन्दी उपन्यास एवं कहानी साहित्य – विनोद कुमार नागर, पृ. 1
3. हिन्दी उपन्यास : समकालीन विमर्श – डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी, पृ. 155
4. हिन्दी साहित्य कोष (भाग 1) डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, पृ. 123
5. साहित्य दर्पण – विश्वनाथ पृ. 2
6. सूर्यबाला के कथा साहित्य का अनुशीलन – श्रीमती उर्वशी बंजारे, पृ. 6
7. सूर्यबाला के कथा साहित्य में नारी के विविध रूप – बलवंत बाबा साहेब, पृ. 7
8. समकालीन हिन्दी उपन्यास, समय और संवेदना – डॉ. वि.के. अब्दूल, 2010
9. हिन्दी महिला उपन्यासकारों में नारी अस्मिता – डॉ. हरिओम, 2015
10. नारी अस्मिता का विमर्श तथा प्रभा खेतान के उपन्यास छिन्नमस्ता के संदर्भ में – कंचन भणावत, 2017
11. सूर्यबाला : रचनायात्रा – अमिताभ वेदप्रकाश, पृ. 15
12. सूर्यबाला की उपन्यास विधा का समग्र मूल्यांकन (हरिशंकर सक्सेना के शब्दों में) – शर्मा शरला, पृ. 116
13. सूर्यबाला के कथा साहित्य में युगबोध – माली बसंत कुमार गणपत, पृ. 133–134
14. यामिनी कथा – सूर्यबाला, पृ. 18
15. यामिनी कथा – सूर्यबाला, पृ. 107
16. मेरे संधि पत्र – सूर्यबाला, पृ. 15
17. दीक्षांत – सूर्यबाला, पृ. 8
18. दीक्षांत – सूर्यबाला, पृ. 134
19. अग्निपंखी – सूर्यबाला, पृ 80
20. वहीं, पृ. 81

21. भारतीय नारी दशा – आशारानी बोहरा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, 1983
22. सुबह के इन्तजार तक – 1980 सूर्यबाला, पृ. 112–113
23. जीवन में आस्था इंडिया टूडे पत्रिका 24 जनवरी 2005 – छेड़ा माधुरी
24. सूर्यबाला के कथा साहित्य का अनुशीलन – श्रीमती उर्वशी बंजारे
25. औरत : आज कल और आज – आशारानी व्होरा, 2005
26. स्त्रीमुक्ति और अस्मिता की पहचान – डॉ. प्राची सिंह, 2017
27. महिला साहित्यकारों का नारी चित्रण – रत्नकुमारी वर्मा
28. ममता कालिया के कथा साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन – गायत्री वर्मा
29. लोकमत समाचार : सितम्बर 2006, पृ. 1 व 3
30. ममता कालिया व्यक्तित्व एवं कृतित्व – डॉ. फैमिदा बिजापुरे, पृ.सं. 13–14
31. ममता कालिया के उपन्यासों में चित्रित समस्याऐं : विविध आयाम – डॉ. लहू रामराव मुंडे पृ, 38–40
32. वहीं, पृ. 18
33. वहीं, पृ. 19
34. लघु उपन्यास : ममता कालिया, पृ. 5
35. हिन्दी साहित्य में महानगरीय जीवन – डॉ. बाबासाहेब. काटे, 2003
36. हिन्दी के सामाजिक उपन्यासों में नारी – डॉ. रेखा कुलकर्णी, पृ. 39
37. स्त्रीत्ववादी विमर्श समाज और साहित्य – क्षमा शर्मा, 2003
38. उपनिवेश में स्त्री मुक्ति कामना की दस वार्ताएं – प्रभा खेतान 2009
39. स्त्री अस्मिता एवं विचारधारा – जगदीश्वर चतुर्वेछी 2004
40. बेघर – ममता कालिया, 1971, पृ. 17–18
41. बेघर – ममता कालिया, 1971, पृ. 126
42. नरक दर नरक – ममता कालिया, 1975, पृ. 96–99

43. प्रेम कहानी – ममता कालिया, 1980, पृ. 104

44. वहीं – ममता कालिया, 180, पृ. 104

45. एक पत्नी नोट्स – ममता कालिया, 1994, पृ. 186

46. वहीं, पृ. 206

47. वहीं, पृ. 137

48. स्त्री मुक्ति व अस्मिता की पहचान – डॉ. प्राची सिंह, 2017